शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य में देश प्रेम

डॉ. रजनीश शर्मा
अधिष्ठाता
कला एवं मानविकी संकाय
संगम विश्वविद्यालय
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

महाकवि पं. आगेटी परीक्षित शर्मा ने श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य द्वारा साहित्य जगत् में देशप्रेम की प्रतिष्ठा का क्रान्तिकारी कार्य किया है। महाकवि पं. आगेटी परीक्षित शर्मा का यह काव्य भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों की परम निधि है। इसके प्रत्येक पृष्ठ प्रत्येक पद से भारतीय सांस्कृतिक मूल्य सरसता, हृद्यता के साथ उद्भासित हो रहे हैं। महाकाव्यकार ने कथाक्रम को अतिशय कुशलता से रचा है। पं. शर्मा के प्राक्कथन से स्पष्ट है कि कथा का ऐतिह्य इतिवृत यदि उन्होंने कर्नल टॉड के राजस्थान के इतिहास से ग्रहण किया है तो भाव पक्ष उनके द्वारा महाराणा प्रताप से सम्बद्ध मेवाड़ प्रदेश विशेषतः चित्तौड़, गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, हल्दीघाटी इत्यादि स्थलों की यात्रा कर प्रत्यक्ष दर्शन व अनुभूतिपूर्वक रचा है। प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य में देश प्रेम का विश्लेषण किया गया है।

संस्कृत का उत्स

सुरभारती भाण्डागार अनुपमेय, अतुलनीय, साहित्य-रत्नों से समृद्ध है, तथापि काव्य का सहज रूप से ही सर्वाधिक प्रभावपूर्ण हुआ करता है। किसी विषय के उपस्थित होने पर कवि प्रतिभा से भाषा और भावों का स्वतः काव्य में उल्लासपूर्ण नर्तन ही सहज काव्य, सुकुमार काव्य, सरस या रस पेशल काव्य से अभिप्रेत है। संस्कृत काव्य शास्त्र में राजानक कुन्तक ने ऐसे ही काव्य को सुकुमार मार्ग की रचना कहा है-

अम्लानप्रतिभोद्भिन्ननवशब्दार्थ बन्धुरः।
अयत्नविहित स्वल्पमनोहारि विभूषणः।।
भावस्वभावप्राधान्यकृततात्पार्य कौशलः। रसादि परमार्थज्ञमनः संवाद सुन्दरः।।
अविभावित संस्थान रामणीयकरंजकः। विधि वैदग्ध्य निष्पन्ननिर्माणातिशायोपमः।।
यत्किंचनापि वैचित्र्यं तत्सर्व प्रतिभोद्भवम्।
सौकुमार्यपरिस्पन्दस्यादि यत्र विराजते।।
सुकुमाराभिधः सोऽयं येन सत्कवयो गताः।
मार्गेणोत्फुल्लकुसुमकाननेनैव षट्पदाः।।[1]

राजानक कुन्तक कालिदास, सर्वसेन आदि कवियों को सुकुमार मार्ग का कवि प्रतिपादित करते हैं।[2] प्रस्तुत महाकाव्य के आरम्भ में डॉ. शर्मा वाल्मीकि, व्यास, कालिदास एवं भवभूति की वन्दनापूर्वक उन्हें अपना आदर्श घोषित कर इस प्रशस्त मार्ग को ही स्वपाथेय निश्चित कर लेते हैं, जिसका सफलतापूर्वक अनुगमन सम्पूर्ण महाकाव्य में वे करते हुये दृष्टिगत होते हैं। सुकुमार मार्ग के काव्य का अन्यतम वैशिष्ट्य है - उसमें रसभाव निर्झर का अजस्र अशेष, अमन्द प्रवाह। रस व भाव की रूचिरता, चारुता, सहृदय हृदय की आस्वाद - क्षमता पर अवलम्बित होती

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है। सहृदय कौन ? आनन्दवर्धन के अनुसार रसास्वादन की क्षमता किंवा 'रसज्ञता' ही सहृदयता है-

"किमिदं सहृदयता नाम ? किं रसभावनपेक्षकाव्याश्रित - समयविशेषाभिज्ञत्वम् उत रसभावादिमयकाव्य स्वरूप परिज्ञान नैपुण्यम् ? पूर्वस्मिन् पक्षे तथा विध सहृदयव्यवस्थापितानां शब्द विशेषाणां चारुत्वनिययो न स्यात्। पुनः समयान्तरेणान्यथापि व्यवस्थापन सम्भवात्। द्वितीयस्मिंस्तु पक्षे रसज्ञतैव सहृदयत्वमिति तथाविधैः सहृदयैः संवेद्यो रसादिसमर्पण सामर्थ्य मेव नैसर्गिकं शब्दानां विशेष इति व्यजकत्वाश्रय्येव तेषां मुख्यं चारुत्वम्।'[3]

अतः कवि जिन रसभावविशेषों की अनुभूति सामाजिकों को कराना चाहता है, इतिवृत्त की धारा को उसी ओर प्रवाहित कर देता है। एतदर्थ कवि कथावस्तु में यथोचित परिवर्तन करने में समर्थ हुआ करता है।

"कविना काव्यमुपनिबध्नता सर्वात्मना रसपरतन्त्रेण भवितव्यम्।

तत्रेतिवृते यदि रसाननुगुणां स्थितिं पश्येत् तदेमाभङ्क्त्वापि

स्वतन्त्रतया रसानुगुणं कथान्तरमुत्पादयेत् न हि कवेरितिवृतमात्र

निर्वहणेन किंचित प्रयोजनम् इतिहासादेव तत्सिद्धेः।"[4]

भारतीय इतिहास की यह विडम्बना रही है कि उसके यथार्थ स्वरूप को ऐतिहासिकों ने उद्भासित करने का यत्न नहीं किया। महाराणा प्रताप के चरित्र विषयक भूरिशः प्रश्न इतिहासकारों में अद्यावधि असमाधेय हैं, काव्यकार का कर्त्तव्य इतिहास के प्रश्नों का उत्तर देना नहीं, न उससे यह अपेक्षा की जाती है एवं न ही जानी चाहिये, इस परतन्त्र कविश्वरों का अन्तिम पाथेय रस सन्निवेश हुआ करता है, अतः सरल हृदय, विद्याव्यसनी सुकुमार मार्गी इन सारस्वत पुत्रों का कथनों, कथांशों के औचित्योनौचित्य की ओर अवधान कम ही होता रहा है। राजानक कुन्तक ने तो महाकवि कालिदास के काव्यों में भी अनेकत्र औचित्य गुण का अभाव संकेतित करते हुये भी इसे कवियों का दोष नहीं माना है

"एतच्चैत स्येव कवेः सहजसौकुमार्य मुद्रितसूक्ति परिस्पन्दसौन्दर्यस्य पर्यालोच्यते, न पुनरन्येषा आहार्यमात्र

काव्यकरण - कौशलश्लाधिनाम्।'[5]

श्रीमत्प्रतापराणायन में देश प्रेम

महाकवि पं. ओगेटी परीक्षित शर्मा ने श्रीमत्प्रतापराणायनम् महाकाव्य में तो महाराणा प्रताप की जीवनगाथा के प्रसिद्ध अंशों का ही अधिक ग्रहण किया है। प्रस्तुत काव्य आद्यन्त देशभक्ति से ओत-प्रोत है। लोक में प्रत्यक्ष देवता सूर्य तथा देशभक्तों के प्रत्यक्ष प्रतापी देवता प्रताप की श्लिष्ट अभिवन्दना से प्रारम्भ होकर महाराणा प्रताप के देशभक्तिमय अन्तिम उपदेश के साथ पूर्ण हुये श्रीमत्प्रतापराणायन का प्रति शब्द देश की स्वतंत्रता, समृद्धि, सम्मान व समुन्नति की अभीप्सा का सरस व्यंजक हैं।

नाट्यशास्त्री भरत द्वारा मान्य भावों में मंचीय सीमाओं आदि के कारण रति-भाव के स्वरूप का जो कान्ताकान्त रति मात्र में संकोच दृष्टिगोचर होता है, उससे परवर्ती काव्यशास्त्रज्ञ रस संख्या विस्तार के भय से अभिमत हो गये हो किन्तु जागरूक आचार्यों को उक्त तथ्य में सर्वसम्मति कदापि नहीं रही। कान्ताकान्त रति से भिन्न रतियों को सर्वदा अपुष्ट मानकर भावध्वनि कहने की मम्मटीय परम्परा भी पूर्णतः युक्ति युक्त नहीं मानी जा सकती। क्रोध, शोकादि के ही

समान रति को सामान्य भाव भी नहीं माना जा सकता यही उसकी अद्‌वितीयता है-

"तुल्ययोर्था मिथोरतिः स स्नेह प्रमेति यावत्। निष्कामतया मिथोरतिः सा मैत्री। अवरस्य परे रतिर्भक्तिः सैव विपरीता वात्सल्यम्। सचेतनानामचेतने रति सम्बन्धः इत्यादि स्वयमूहयूम।"[6]

रति के प्रमोदात्मा होने पर भी पुत्ररति मित्ररति, भगवद्रति, देशरति के परिपाक को शृंगाररस नहीं कहा जा सकता। ये सभी रतियाँ स्वरूपतः भिन्न हैं। अतः अनेक काव्यमर्मज्ञों ने अष्ट या नवरसों के अतिरिक्त प्रेयान् (रूद्रट) वत्सल (विश्वनाथादि) भक्ति (मधुसूदनसरस्वती, रूपगोस्वामी) करुण (भवभूति), मृगया, अक्षक्रीड़ा (दशरूपक) इत्यादि रसों का निरुपण किया।

इसी परम्परा में हिन्दी समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रकृति प्रेमरस की चर्चा की जिसका सुन्दर निदर्शन भी प्रस्तुत महाकाव्य में समुपलब्ध है। आज संस्कृत व अन्य भाषाओं के काव्यशास्त्री देशभक्ति रस को स्वीकार करते है-

"क्रीड़ा विशेष विषया देशभक्ति विशेष विषयाः सिद्धान्त विशेष विषयाश्वेत्यादयोऽनेके रतिप्रकाराः सम्भवन्ति। अत्र क्रीड़ा विशेष विषया रतिरक्षरत्यादिरूपादेश विशेष विषया राष्ट्रभक्त्यादिरूपा सिद्धान्तविशेष विषया च साम्यवादादि- सिद्धान्तरतिरूपा।"[7]

'रति' शब्द के अर्थ को रूढ़ि से मुक्त कर व्यापक बनाने हेतु परवर्ती काव्यशास्त्री कर्पूर गोस्वामी ने उसके स्थान पर 'प्रेम' शब्द का प्रयोग कर महाराजभोज की भांति उसे समस्त भावों का मूल माना-

उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति प्रेम्य खण्डरसत्वतः।
सर्वे रसाश्च भावाश्च तरंगा इव वारिधौः।।[8]

प्रेम का ही एक रूप है- "देशप्रेम"। प्रेम रूप-कुरूप की, गुण-अवगुण की, अनुकूल-प्रतिकूल आचरण की मीमांसा नहीं करता। वह प्रत्युत्तर प्रतिदान या प्रत्युपकार की भी अपेक्षा नहीं रखता। उसकी पराकाष्ठा प्रिय के लिये आत्मविस्मृति, आत्मोत्सर्ग में निहित होती है। देश-प्रेम की उत्कटता भी देश की स्वतंत्रता व सम्मान रक्षा हेतु दीपशिखा पर शलभवत् स्वयं को न्यौछावर कर देने वाले चरित्रों में अनुभूत की जा सकती है। मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिये जगत के सर्वसुखों का सहर्ष त्याग करने वाले कष्टसहिष्णु महाराणा प्रताप जैसे धीर-वीरों की काव्यमय चरित-गाथा भला किस प्राणवान् देश प्रेमी को भावोद्रिक्त नहीं करती और इस देश प्रेम के भाव की दृष्टि किस सहृदय को देशप्रेम रस में सराबोर नहीं करती ?

महाकवि पं. आगेटी परीक्षित शर्मा ने श्रीमत्प्रतापराणायन महाकाव्य द्‌वारा साहित्य जगत में इसी अभिनव रस की प्रतिष्ठा का क्रांतिकारी कार्य किया है। डॉ. शर्मा के मत में भी रौद्र, वीर, करुणादि इस देश-प्रेम के आवरण या अंग रहे हैं-

कारुण्यवीररासिक्यं देशभक्त्या प्रपूरितम्।
राणायनं करोम्यत्र रामायणकथामिव।।[9]

कवि की राष्ट्रभक्ति ने ही उन्हें राष्ट्रभक्ति ने ही उन्हें राष्ट्र की सनातनी भाषा संस्कृत एवं राष्ट्रपुरुष महाराणा प्रताप की लोकपावनी कथा का भक्त बनाया है।[10] आधुनिक भारत भी (प्राचीन भारत के बिम्बवत्) पूर्ववत् देशप्रेमी मातृभूमि की आन-बान-शान की रक्षा में अनाम आत्मोसर्ग हेतु उद्‌यत भारतीयों से परिपूर्ण हो इस विचार और आशा से पं. शर्मा ने देश प्रेम रसमय इस महाकाव्य का प्रणयन किया-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तदानींतनकालस्य रूपरेखाप्रदर्शनम् ।
इदानींतनकालस्य भूयात् भारतदर्पणम् ।।
विचिन्त्यैवं कृतं काव्यं देशभक्त्या प्रपूरितम् ।
सर्वलोकसमाराध्यं भव्यं राणायनं मुदा।।
राणायनकथावस्तु रामायणकथेव तत् । कर्त्तव्यं देशभक्तिं च शास्तु नित्यं महीतले।।
यदापृथिव्यांदेशस्य संकटं प्रविजायते।
राणायनमहाकाव्यं स्फूर्तिंदद्यात् भुवौकसाम् ।।[1]

श्रीमत्प्रतापराणायनम् का प्रत्येक सर्ग प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से देशभक्ति भाव को सहृदय में उद्बुद्ध करता है। आधुनिक युग में जब स्वार्थावरण ने हमारी चेतना को ढक दिया है, हम रसों की अपेक्षा रसाभासों में आनन्द लेने लगे हैं, ऐसे काव्य ही हमारे हृदयों में सुप्त देश-प्रेम की चिंगारी में चमक उत्पन्न कर सकते हैं एवं परिस्थिति जन्य वर्तमान मनोवृतिगत आवरण को भंग कर देशप्रेम रस का आस्वादन करा सकते हैं। इस रस की सत्ता के विषय में देशभक्त सहृदय का अनुभव ही प्रमाण है- सचेतसामनुभवः प्रमाणं तत्र केवलम् ।

प्रस्तुत महाकाव्य में देशप्रेम की शनैः शनैः दीप्ति जगमल्ल का पट्टाभिषेक होने एवं महाराणा प्रताप द्वारा वन में जाकर मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए भीलों को प्रबोधित करने[12] , कृष्णसिंहादि प्रियजनों को संदेश देने[13] मुगल सम्राट अकबर के सेनानायकों आसफखान, फरीदखान, अब्दुलखान, कासिमखान, फिरोजखान व शाहबाजखान का वध करने[14] राजा मानसिंह को तर्जना देने व अवमानित करने[15], हल्दीघाटी में युद्ध करने[16] पुत्री के हाथ से मार्जार द्वारा घास की रोटी छीन ले जाने पर विचलित होकर महाराणा प्रताप द्वारा छः माह के विश्राम का पत्र भेजे जाने पर प्रत्युत्तर में प्राप्त पृथ्वीराज के पत्र से पुनः स्वाभिमान जागरण[17] महाराणा प्रताप की विजय होने[18] स्वातन्त्र्योत्सव मनाने[19] एवं महाराणा प्रताप द्वारा मृत्युशय्या से दिये गये उपदेशों में होती है।[20]

महाराणा प्रताप की आत्मछवि को इतिहास में प्रादेशिक मोह के रूप में नहीं देखा जाता क्योंकि अन्य राजाओं की भांति उन्होंने केवल अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रतिवेशी राजाओं से युद्ध नहीं किया प्रत्युत् स्वल्प शक्ति सम्पन्न होते हुए भी सर्वशक्तिमान् विदेशी भारत सम्राट से देश स्वतन्त्रता के निमित्त अनवरत अनथक संघर्ष किया। महाकवि पं. ओगेटी परीक्षित शर्मा ने प्रताप चरित्र की इस मूल भावना को ही भारतप्रेम के रूप में व्यापकतया व स्फुटतया व्यक्त किया है। देशप्रेम रसानुभूति विषयक कतिपय प्रसंग यहां उदाहृत है-

युवावस्था में प्रतापकृत प्रण जिसका उन्होंने आजीवन पालन किया-

स्वपेयं नैव शय्यायां तावत्पर्यन्तमेव हि।
यावन्मेवाडदेशेन स्वातन्त्र्यां नैव भुज्यते।।
चित्तौड़े राजपुत्राणां यावन्नोड्डयते ध्वजः।
तावच्च धातुपात्रेषु नैव कुर्या हि भोजनम् ।।
सुखवस्तुनि सेवेयं नैव निद्रां भजामि च।
स्वातन्त्र्यसिद्धयै यत्नं कुर्या शक्तया दिवानिशम् ।।[21]

मुगल सम्राट अकबर के प्रभाव व शक्ति का वर्णन कर महाराणा प्रताप को सम्राट की अधीनता स्वीकार कर लेने का परामर्श देने वाले राजामानसिंह के प्रति महाराणा प्रताप के प्रत्युत्तर का यह अंश प्रत्येक सहृदय को देश प्रेम रस के अमन्द आनन्द - सन्दोह में निमज्जित करने में सक्षम है-

यः कोऽपि नाम मम भारतवंशजानाम्
आपदयेद्यदि कलंकमहं विलूय।

खड्गेन नैकशकलांश्च तदीय जिह्वांकृत्वा न दिक्षु विकिरामि विनादयांकिम् ।।

आनन्त्यसस्यफलसज्जित पुण्यभूमिं देशंत्वमत्र परहस्तगतं विलोक्य।

नैवासि तप्तहृदयेन विभासमानः कालुष्यभावभरितं खलुतेऽद्य चित्तम् ।।

श्वासानिलो वहति यावदिहैव देहे तावत् प्रियो भवति दैशिकभक्तिभावः।

आकाशपातनमपीह चिरं सहेयं कांक्षे न चापि परशासनदास्यवृत्तिम् ।।

नैवाऽस्ति मेऽत्र धरणीपरिपालनाशा बभाति दिव्यभरतावनी भक्ति भावः।

य कोऽपि वा भवतु भारतदेशजातः राष्ट्रस्य पालनपरो मम योग्य एव।।[22]

लोकविश्रुत हल्दीघाटी युद्ध के अवसर पर प्रताप द्वारा अपने सैनिकों को दिया गया उद्बोधन भी सहृदयों को देशप्रेमरस में मग्न कर देने वाला है-

जयोभवेद्यदि प्रियाः मुदैव भारतं वयम् प्रपालयेम शाश्वतं प्रजाभिरेव सौख्यदम् ।

भवेत्तथा हि नैव तर्पणं क्षतांग संस्रुतैः विधेम भारताय रक्तवाहिनीचयैः मुदा।।

प्रतिक्षणं तु दृग्भिरेव चावगम्य वर्तनं परालिकर्तनं विधातुमेव यान्तु सैनिकाः।

शिलासमान चेतनाः दया विहीनभावुकाः निरन्तरं च मातृभूमिरक्षणे भवन्त्मिह।।

द्रुतं धियाऽत्र यान्तु मातृभूमिरक्षणात्यकाः परालिभूमिजातभजने प्रभजनाशुगाः।

मदात्तशत्रुभूधरान् विदारणे पविप्रभाः विधातुमेव देशमेनमात्मवश्यभासितम् ।।

नितान्त मातृभूमिरंजने च रागरंजिताः पिनाकपाणि हस्तदीप्ततीक्ष्णशूलसन्निभाः।

कृतान्तविम्बिताः महारणे च खेलनात्मकाः चलन्तु शत्रुशीर्षकन्दुकैः प्रखेलितंु प्रियाः।।[23]

अन्य रसों की अंगरूप से योजना भी महाकाव्य में यत्र-तत्र प्राप्त होती है। यहां देश प्रेमरस के सर्वाधिक पोषक रस है, वीर व रौद्र किन्तु इनके साथ ही करुण व भयानक रस भी यथावसर आस्वादित होते हैं।

करुणरस की छटा चेतक के स्वर्गारोहण के अवसर पर प्रेक्षणीय है। अपने प्रिय अश्व के लिये महाराणा का कृतज्ञता ज्ञापनपूर्वक अश्रुनयन रूदन किसे द्रवित नहीं करता-

वद में हय विश्वभूषण कथमेवं कृतवानसि स्वयम् ।

अकृतं कृतमेव शाश्वतं मम पंचेन्द्रियभावरूपम् ।।

त्वयि सन्ति ममाशयाः प्रिय! मम भावावलिशशिरूपक।

हृदि विश्वसिमीह चेतक ने हि मित्रं भुवि मेऽस्ति चिन्तय।।

शृणु चेतक विश्वमण्डले वरमित्रं भविता न मे प्रियः।

मनसा वचसा च कर्मणा त्वयि लग्नाः मम सर्वभावनाः।।[24]

अद्भुत रस तो वीर रस का विकृत रस ही होने से महाराणा के प्रत्येक वीरकर्म के साथ निबद्ध है, हल्दिघाटी में युद्धरत महाराणा प्रताप साक्षात् एकलिंग की महिमा को ही प्राप्त हो रहे है-

भीष्माकार सुदीप्यमानमचलप्राभावभद्राकृतिं
चैतन्याकृति चेतकोपरिलसद्दैवीय तेजस्विनम् ।
एकान्ते भवमेकलिमहिमां संप्राप्तरूद्राकृतिं
शस्त्रास्त्रवृतदीप्तिमन्त्रममरं राणाप्रतापाधिपम् ।[25]

शृंगार के शुचिस्वरूप की अभिव्यक्ति पुत्री की क्षुधा से विचलित हृदय महाराणा प्रताप द्वारा मुगल सम्राट अकबर को पत्र लिखने पर पाटेश्वरी द्वारा किये गये कर्त्तव्यबोध के अवसर पर हृदयता से हुई है वस्तुतः भारतीय सभ्यता संस्कृति संपूरित कुलजाभार्या का स्नेहाविष्ट यह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पाथेय सर्वथा पवित्रतम् शृंगार की ही तो अभिव्यक्ति है,

"हे मेरे प्राणाधार ("मम जीवितेश") आपको किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, सम्पूर्ण सैन्य के नष्ट हो जाने पर भी आपके साथ अपने कुमारों के सहित मैं खड्गहस्त होकर शत्रुनाश के प्राणपण से सनद्ध रहूंगी और वीरमाता - नरपुंगव प्रताप की भार्या मैं आपके शत्रुओं को निर्मूल कर दूँगी, अतः आप षाण्णमासपर्यन्त विश्रान्ति का परित्याग कर पूर्ववत् राष्ट्रकार्य में संलग्न हो जायें।"[26] में भामतीवत् आपकी सहचरी हूँ-

महात्मनां प्रज्वलितेषु पत्सुस्त्रियः सदा पार्श्वतलेषु दीपाः।

सा भामती प्राप्य पतिप्रिया हि बभाति विश्वेखलु भामतीति।।[27]

प्रस्तुत उद्बोधन श्रवणानन्तर अपनी भार्या को आश्वस्त करते हुये महाराणा प्रताप का प्रत्युत्तर तो शिष्ट शृंगार की पराकाष्ठा ही है, एक आदर्श पति का अपनी रमणी को यही सर्वोत्कृष्ट प्रतिदान हो सकता है-

त्वमेव मम नेत्रकान्तिः घनान्धकारेषु तडित्प्रकाशः।

धन्योस्मि जातः खलु वीरपत्नीं संप्राप्य नूनं बहुधाकृत्तार्थः।।[28]

शृंगार रस का चमत्कार तो विशदता से अकबर की कामपानशाला के वर्णन में ही लब्ध है, सभा में नृत्य-गायनरत सुन्दरीरामा का यह नख-शिख वर्णन प्रेक्षणीय है-

हसितलसितदन्तैः दिव्यमन्दस्मिता भैः वलन चलनवक्रैः चारुगात्रीविलासैः।

अमलिन विधुबिम्बैः ताम्रमन्याधरोष्ठैः विशदनटनभग्नाः भान्ति रामाः सुरम्याः

अति चपलकरातैः पीनवक्षोजभारं बहु कठिनतलाभ्यां मर्दयन कामिनीनाम्।

विकिरति च सुहासं गाढमालिय रामाः गिलति खलु सुखंतत् कामुकः सन् स तुर्कः।[29]

उपर्युक्त शृंगार के विषय में प्रस्तुत महाकाव्य के संदर्भ में देखे तो- सत्य तो यह है, कि देशभक्त वीरों के सत् चारित्र्य में कलंकभूता कामुकता का स्थान कहाँ ? शृंगार के विकृतरस हास्य के लिये भी इस गम्भीरवृत महाकाव्य में कोई स्थान नहीं है।

हल्दीघाटी में सलीम के साथ महाराणा प्रताप के युद्ध के एक ही प्रसंग में अंगरसों से पोषित देशप्रेम रस की छटा और उसकी अनुभूति प्रेक्षणीय है। रौद्र रस का चरम परिपाक प्रस्तुत उदाहरण में आस्वादनीय है-

रेरे मानस जर्झरोऽसि समरे सालीम किं कम्पसे चल्लां त्वं समरे जपस्व चपलं नास्त्येव कालः परम्।

खड्गं में तव कण्ठकृन्तनरतं नैवासि रोद्धुं भुवि चास्त्येवात्र कृतान्तराडिति परं त्वामेव संरक्षितुम्।[30]

वीभत्सरस द्वारा जुगुप्सा का प्रत्यक्ष अनुभव विशिष्टरूपेण परिलक्षित है-

प्राचंद्दौर्बलखड्गचालयनरथः प्राधिक्यभीता वहो खड्गाघातभरेण खण्डिततनुर्मत्तेभसंचालकः।

आक्रोशन् पृथिवीतले विपतितो रक्ताभिषिक्तक्रमः पंचत्व सहसा जगाम समरे घोरातिघोरं तदा।।[31]

भयानक रस का प्रत्यक्ष प्रवाह प्रस्तुत पद्य में आस्वादनीय है-

घोरं तत् सकलं समीक्ष्य भयदं सर्वेऽपि भीत्या गताः

सालीम श्यालयुतस्म माननृपतिः त्रस्तो महत्संगरातो।

भृत्यौः भीकरगहवरात द्रुततमं चावां बहिर्निर्गतौ चास्माकं किमु संगरेण चल रे भद्राणि पश्याव रे।।[32]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वीररस का अशेष प्रवाह यहाँ स्पृहणीय है-

सत्यं तद्भयदं महोप्रमतुलं सद्धर्मदीक्षायुतं
युद्ध भीकरहल्दिघाटी चलितं वीक्ष्यैव शत्रुः परम्।
अहो किं कथयेयमद्य भयदं जन्यं समुद्दिश्य भोः
द्रष्टव्यं यदि विद्यते तदखिलं दृष्टं तदधैव में।।[33]

अद्भुत इरस की विलक्षणता अधोविन्यस्त रूपेण श्लाघनीय है-

किं शौर्य किमु धैर्यमत्र नितरां नीतिः सुधर्मायुतः
लोकेभाति महाद्भुताश्रितरसः पूर्ण प्रभावान्वितः।
एवं ता जगदुश्च पीतवसनाः सेना स्वहाहारवैः
कष्टे सत्यपि नीतिबद्धचरितो राणा महाभारते।।[34]

उपर्युक्त पद्यों में क्रमशः रौद्र, वीभत्स, भयानक, वीर एवं अद्भुत रस की अंगता से देशप्रेम रस पुष्ट हो रहा है। यहाँ यह कहना भी अतिश्योक्ति न होगी कि यहाँ इन रसों की वीर रस के प्रति सेनापतितद्भृत्यवत् अंगता है तथा इन अंगरसों से पुष्ट देशप्रेमरस अंगी के रूप में आस्वादनीय है।

महाकाव्य में वात्सलय रस, भक्तिरस, प्रकृति प्रेमरस का भी युक्तिसंगत सन्निवेश कर पं. शर्मा ने अपनी कृति में सर्वातिशायी वैशिष्ट्य का आधार करने में सफल रहे हैं। घास की रोटी बिड़ाल द्वारा छीने जाने पर रूदनरत बालिका के प्रति महाराणा प्रताप व पाटेश्वरी द्वारा प्रदर्शित सहज स्नेह वात्सल्यरस पूरित ही है - "तारस्वरेण रूदनरता बिडाल द्वारा पीडित, रोटिकाविहीन दुर्बली बाला की पौनःपुन्येन मधुर चुम्बनों की बौछार से सान्त्वना प्रदान करती हुई पाटेश्वरी उससे कहती है, हे मेरी नयन कौमुदी मत रो मैं तुझे और रोटिका दे दूंगी। यह दृश्य देखकर प्रताप पर मानो वज्राघात हुआ और उनका हृदय उद्वेलित हो गया।"[35]

इसी प्रकार खड्गहस्त शिशु अमरसिंह द्वारा संग्राम में शत्रुओं को मारने की बात कहने पर महाराणा प्रताप द्वारा उसे गोद में उठाकर चूमना तथा पितृप्रेम के पात्र अपने पुत्र के प्रति पाटेश्वरी की गर्वमिश्रित वत्सलता में वात्सल्य का स्निग्ध प्रवाह प्रत्येक सहृदय को आनन्द विभोर ही करता है।[36]

भक्तिमति मीराबाई के चरित्रवर्णन में भक्तिरस गंगोत्री का अजस्र प्रवाह आस्वादनीय है- "मीरा ने कृष्ण को ही अपना भर्त्तार माना, उनकी अनन्य दासी के रूप में उसने अपना जीवन उन्हें समर्पित कर दिया विरहातुरा वह कृष्ण के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं जानती थी- "सा कृष्णात् परं पश्यति नान्यदेवम्'।[37] तथा पौनपुन्येन अपने आराध्य और प्रियतम से स्वकीय उद्धार हेतु अनवरत् प्रार्थना करती रहती थी-

हे नन्दसूनो तव दर्शनार्थं
मयूरपिच्छाच्छमनोज्ञचीरम्।
धृत्वाऽहमेष्यामि च वर्षकाले प्रसीद मामुद्धर देवदेव।।[38]

प्रकृति प्रेमियों के लिये वसन्तागम[39], ग्रीष्मर्तुवर्णनम्[40] तथा प्रावृज्जम्भणम्[41] में प्रकृति प्रेम रस की अनुभूति हुयी है। ये केवल ऋतुवर्णन नहीं अपितु इनका महाकाव्य के शास्त्रीय विधानकों की दृष्टि से परम वैशिष्ट्य है, वसन्तवर्णन अकबर के सेनानायकों आसफखान, फरीदखान, अब्दुल्लखानादि के महाराणा प्रताप द्वारा युद्ध में किये गये वध और विजय के पूर्व सूचक के रूप में किया गया है, जबकि मुगल सम्राट अनुचर मानसिंह और महाराणा प्रताप के वाक्कलह से उद्भूत अकबर के युद्धोन्माद का सूचक ग्रीष्मवर्णन तथा क्षुधित पुत्री के क्रन्दन से विगलीत सपत्नीक महाराणा प्रताप की सूचना देने के लिए वर्षा वर्णन की योजना हुयी है। इस प्रकार ये तीनों ऋतु वर्णन मात्र महाकाव्य परम्परा का निर्वहन मात्र नहीं प्रत्युत रस योजना

के प्रति औचित्य को धारण करने से सहृदय में महाकाव्य के अंगीरस के आस्वादन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाले हैं।

निष्कर्ष

साररूप में अभिधेय है, कि प्रस्तुत काव्य में पं. शर्मा ने देशप्रेमरस की प्रतिष्ठा के अभिनव प्रयोग के साथ-साथ महाकाव्य में आद्यन्त उसकी आस्वादनीय सरस सत्ता की प्रतीति कराते हुये अन्य अंगरसों का भी सम्यक् औचित्यपूर्ण परिपाक करवाया है, इस दृष्टि से श्रीमत्प्रतापराणायनम् महाकाव्य की रस योजना सर्वथा परिपुष्ट अतः युक्ति सगत सिद्ध होती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 वक्रोक्ति जीवितम् - राजानक कुन्तक-1/25-29
2 वही-1/52 की कारिका की वृत्ति
3 आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकः, 3/16 की वृत्ति
4 वही - 3/14 की वृत्ति
5 राजानक कुन्तक - वक्रोक्तिजीवितम्/ 1/57 की वृत्ति
6 काव्यप्रकाश- माणिक्यचन्द्रसूरिकृत टीका - पृ. 65
7 ब्रह्मानन्द शर्मा - रस लोचनम् - पृ. 28
8 अलंकारकौस्तुभ - 5/पृ. 149 उद्धृत श्रीमतप्रतापराणायन भूमिका पं. 13
9 श्रीमत्प्रतापराणायनम् - मेवाड़काण्ड / 5
10 वहीं- मेवाड़काण्ड/5/32-37
11 वहीं-मेवाड़काण्ड 8/ 13-16
12 वहीं- उदयकाण्ड / सर्ग-6
13 वही-सर्ग-6-9
14 वहीं- सर्ग-13
15 वहीं दिल्लीकाण्ड / सर्ग-7-12
16 वहीं - सर्ग - 1-7
17 वहीं- सर्ग-17
18 वहीं-विजयकाण्ड / सर्ग-3
19 वहीं - सर्ग - 5
20 वहीं - सर्ग - 7
21 वहीं - उदयकाण्डम् 2/58-60
22 वहीं - दिल्लीकाण्ड - 10/8-9, 12, 32
23 हल्दिघाट्काण्डम् - सर्ग-4/ श्लो. 7, 13, 15, 21
24 वही - सर्ग-6/ श्लोक 7-9
25 वही - सर्ग-5/ श्लोक 11
26 वही - सर्ग-12/ श्लोक 36-47
27 वही - श्लोक 48
28 वही - श्लोक 50
29 वही - दिल्लीकाण्ड -सर्ग-2/ श्लोक 4, 5
30 वही - हल्दिघाट्काण्ड/सर्ग-5/ श्लोक 23
31 वही - श्लोक 24
32 वही - श्लोक 25
33 वही - श्लोक 27
34 वही - श्लोक 28
35 वही - सर्ग-12/श्लोक 34-38
36 वही - सर्ग-9/श्लोक 49-52
37 वही - मेवाड़काण्ड/सर्ग-10/श्लोक 30-39
38 वही - श्लोक 40
39 वही - 3/सर्ग-5
40 वही - 4/सर्ग-13
41 वही - 5/सर्ग-10